ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 126-128**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

प्रयागराज के सतत स्थानीय विकास में पर्यावरण राजनीति की भूमिका : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

अलका सिंह

शोध अध्येत्री– राजनीतिशास्त्र विभाग सी० एस० एन० पी०जी० कॉलेज, हरदोई (उ0प्र0), भारत

Received-04.09.2025, Revised-11.09.2025, Accepted-17.09.2025 E-mail : Email- alkasingh-pol@gmail.com

सारांशः अमूर्त/21 वीं सदी में तीव्र आर्थिक प्रतिस्पर्धा, नगरीकरण, वैश्विक श्रेष्ठता की प्रवृत्ति राजनैतिक विद्वेष के कारण पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास पर कम ध्यान दिया गया, जिसका दीर्घकालीन परिणाम ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन,अम्ल वर्षा,जैवविविधता, प्राकृतिक संसाधनों का विनाश, सामाजिक– आर्थिक असमानता, प्रो राजनैतिक संकट आदि हैं। किसी भी राष्ट्र का सतत विकास पर्यावरण राजनीति पर निर्भर करता है। यह अध्ययन प्रयागराज के सतत स्थानीय विकास मैं पर्यावरण राजनीति की भूमिका का विश्लेषण करता है। प्रयागराज एक प्राचीन तीर्थ–स्थल है त्रिवेणी संगम एवं महाकुंभ जैसे धार्मिक आयोजन तथा शहरीकरण के कारण पर्यावरण चुनौतियां एवं राजनीतिक निर्णय दोनों घनिष्ठता से जुड़े हुए हैं। निष्कर्षतः समावेशी नीतियां और जमीनी स्तर पर भागीदारी एवं प्रभावी पर्यावरण राजनीति सतत् स्थानीय विकास के लिए आवश्यक है।

***कुंजीभूत शब्द–* सतत विकास, प्रयागराज का सतत स्थानीय विकास,पर्यावरण राजनीति, महाकुंभ, परियोजनाएँ, नीतियाँ।**

परिचय– पर्यावरण राजनीति, पर्यावरण संसाधनों एवं नीतियों पर विचार करता है, जो सतत् स्थानीय विकास का केंद्र बिंदु है। जनपद प्रयागराज ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक रूप से समृद्ध गंगा, यमुना एवं अदृश्य सरस्वती नदियों के संगम पर स्थित नगर है। यह जनपद पूर्व में इलाहाबाद के नाम से जाना जाता था। प्रयागराज एक तीर्थ स्थल है, जहाँ त्रिवेणी संगम एवं महाकुंभ जैसे विश्व के सबसे बड़े धार्मिक आयोजन होते हैं (कुमार निर्मलेंदु 2019:50)। प्रयागराज धार्मिक ही नहीं, अपितु राजनीति एवं आर्थिक विकास में भी देश को पहचान दी है। प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ को मूत सांस्कृतिक धरोहर घोषित किया गया है। प्राचीन काल से ही पर्यावरण पर विशेष ध्यान दिया गया है। प्रयागराज में स्नान पर्व पर अत्यधिक जनसमूह एवं तीव्र मानवीय गतिविधियों का प्रभाव पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी आदि पर पड़ा है। प्रयागराज पर्यावरण राजनीति, शहरी नियोजन, संसाधन प्रबंधन एवं सामुदायिक आजीविका को आकार है। सतत स्थानीय विकास तभी संभव है, जब राजनीतिक प्रक्रियाएँ पारदर्शी, वैज्ञानिक एवं समावेशी हो (आर गुहा 2000)। यदि पर्यावरणीय मुद्दे सार्वजनिक होते हैं, तो न्यायपालिका, मीडिया एवं नागरिक समाज सक्रिय भूमिका निभाते हैं और यही स्थायी पर्यावरण राजनीति बनाती हैं। यह शोध पत्र प्रयागराज में पर्यावरण राजनीति की सतह स्थानीय विकास को बढ़ावा देने में भूमिका विश्लेषण करता है। जिसमें शासन संरचनाएँ, सामुदायिक भागीदारी एवं पर्यावरण चुनौतियों का अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य–

- पर्यावरण राजनीति की अवधारणात्मक संकल्पना का अध्ययन करना।
- पर्यावरण राजनीति के वैश्विक, राष्ट्रीय एवं स्थानीय परिदृश्य का अध्ययन करना।
- प्रयागराज में पर्यावरण राजनीति के माध्यम से सतत स्थानीय विकास का अध्ययन करना।

पद्धति– इस शोध पत्र में शोध अध्येता ने पर्यावरण राजनीति, सतत विकास एवं प्रयागराज की पर्यावरण नीतियों के विषय में आंकड़े एकत्र करने हेतु विभिन्न शोध लेखों, सरकारी रिपोर्ट एवं केस स्टडी की समीक्षा करने की विधि को अपनाया है, जिसके परिणाम स्वरूप एक अवधारणा पत्र के रूप में शामिल किया गया है।

सतत विकास– संभवतः 1970 के दशक में सतत विकास संकल्पना आयी। 1987 में पर्यावरण ओर विकास पर ब्रंटलैण्ड कमीशन रिपोर्ट प्रकाशित हुई जिसमें सतत विकास की संकल्पना की सर्वप्रथम व्याख्या की गयी। सतत विकास का तात्पर्य है ,''ऐसी विकास पद्धति से है जिसके द्वारा भावी पीढ़ियों की आवश्यकता पूर्ति से समझौता किए बिना ही वर्तमान आवश्यकता की पूर्ति की जाए'' (डब्ल्यू०सी०ई०डी०1987)। इस प्रकार के विकास का मूल मानवीय गतिविधियों और प्राकृतिक कारकों के बीच एक सतत एवं स्थिर संबंध है, जो आने वाली पीढ़ियों की संभावनाओं पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता है। सतत विकास के लिए आर्थिक– सामाजिक एवं पर्यावरण तीनों पक्षों में संतुलन बनाए रखना अति आवश्यक है। प्रयागराज में सतत स्थानीय विकास (Sustainable Local Development) को सुनिश्चित करने में पर्यावरण राजनीति (Environmental Politics) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

पर्यावरण राजनीति प्रयागराज में सतत स्थानीय विकास की आधारशिला है, जो, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं पारिस्थितिक कारकों के जटिल अंतर्संबंधों की मध्यस्थता करती है। यह सहभागी शासन को बढ़ावा देकर स्वदेशी ज्ञान के उपयोग द्वारा तथा नवीनतम प्रोद्योगिकियों को अपनाकर प्रयागराज सतत विकास कर रहा है।

प्रयागराज में सतत् स्थानीय विकास– प्रयागराज में सतत स्थानीय विकास के लिए प्रयागराज विकास प्राधिकरण एवं उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा जारी योजनाएँ आदि के माध्यम से विकास किया जा रहा। प्रयागराज शहर धार्मिक पर्यटन, कुंभ मेला और प्रशासनिक महत्व के कारण तेजी से विकसित हो रहा है। सतत् स्थानीय विकास पर्यावरण संरक्षण, शहरी नियोजन, बुनियादी ढांचे के आधुनिकीकरण तथा नागरिक कल्याण को ध्यान में रखते हुए किया जा रहा है। प्रयागराज विकास प्राधिकरण (PDA), प्रयागराज नगर निगम (PMC) और स्मार्ट सिटी मिशन जैसे सरकारी प्रयासों के माध्यम से शहर को एक स्मार्ट, समावेशी तथा पर्यावरण के अनुकूल शहर का विकास किया जा रहा है। प्रमुख पहलें और परियोजनाएं प्रयागराज में सतत् विकास की दिशा में चल रही हैं, जो आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय और पर्यावरण संतुलन पर जोर देती हैं। प्रयागराज में कुछ प्रमुख परियोजनाओं को हम पहले ही, उसके द्वारा विकास को अति संक्षिप्त रूप अग्रलिखित कर चुके है :

प्रयागराज विकास प्राधिकरण (PDA) 1974 में स्थापित, PDA शहरी नियोजन, भूमि अधिग्रहण और आवासीय योजनाओं का प्रबंधन करता है। 200 नए गांवों को शामिल कर दायरा 1278 वर्ग किमी तक बढ़ाया गया। 5000 नए प्लॉट (झूंसी, नैनी, फाफामऊ, झलवा में) विकसित किये जा रहे हैं।

नियोजित शहरीकरण, पारदर्शी आवंटन (ई–नीलामी) और सतत् विकास सुनिश्चित करना।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

स्मार्ट सिटी मिशन के लिए 2015 में आयी परियोजना के अन्तर्गत सड़क विकास, चौराहों का सुधार, सार्वजनिक परिवहन और साइकिल लेन नेटवर्क का विस्तार किया गया है। संगम क्षेत्र में आकांक्षी शौचालय और मल्टी–एक्टिविटी, प्ले स्टेशन स्थापित किए गए हैं। स्वच्छता, स्वास्थ्य, डिजिटल शासन और पर्यावरण–अनुकूल परिवहन को चलाए जा रहे हैं।

स्वदेश दर्शन के लिए पर्यटन–केंद्रित योजना के द्वारा स्थानीय पर्यटन स्थलों का विकास, 'वोकल फॉर लोकल' पर जोर दिया गया है। जिम्मेदार पर्यटन स्थानीय अर्थव्यवस्था मजबूत करते हैं।

आवास और भूमि विकास के अन्तर्गत 12 आवासीय योजनाओं में 154 फ्लैटों को पारदर्शी लॉटरी के माध्यम से आवंटित किए जा रहे हैं। स्मार्ट क्लासरूम और खेल सुविधाएं भी उपलब्ध कराई गई हैं।

पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए जलमार्ग–1 (एनडब्ल्यू–1) का विकास, अपशिष्ट प्रबंधन तथा जल की स्वच्छता के लिए कार्य किए गए हैं। महाकुंभ के बाद बुनियादी ढांचे का पुनर्वास पर विशेष ध्यान दिया गया। प्रदूषण नियंत्रण, स्वास्थ्य सुधार और जल संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया गया है।

विभिन्न चुनौतियों तथा शहर की तेज जनसंख्या वृद्धि (विशेषकर कुंभ मेला के कारण) के बावजूद, बाढ़ प्रबंधन, ट्रैफिक और स्लम क्षेत्रों का विकास चुनौतियां बनी हुई हैं। PDA और PMC द्वारा AI, ML और GPS जैसी तकनीकों का उपयोग सुझाया गया है, जो स्मार्ट सिटी को आदर्श गांवों (मॉडल विलेज) से जोड़ सके। भविष्य में नवीकरणीय ऊर्जा, डिजिटल शासन और क्षेत्रीय विकास पर विशेष ध्यान दिया जाएगा, जो संयुक्त राष्ट्र के सतत् विकास लक्ष्यों (SDGS) से जुड़ा है। प्रयागराज का सतत् स्थानीय विकास आर्थिक वृद्धि के साथ ही सांस्कृतिक धरोहर को भी संरक्षित कर रहा है।

प्रयागराज में सतत स्थानीय विकास एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें शासन, नागरिकों, पर्यावरणविदों और योजनाकारों सभी की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। यदि पर्यावरण, समाज एवं अर्थव्यवस्था के बीच संतुलन रखते हुए योजनाएं बनाई जाएं, तो प्रयागराज न केवल भारत का सांस्कृतिक केंद्र बना रहेगा, बल्कि सतत विकास का आदर्श मॉडल भी साबित होगा।

पर्यावरण राजनीति– 1960 के दशक में रेचल कार्सन की 'साइलेंट स्प्रिंग' (1962) के प्रकाशन के पश्चात् पर्यावरण राजनीति केंद्र में आया (साइलेंट स्प्रिंग साइट)। पर्यावरण राजनीति विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करता है। 21 वीं सदी में पर्यावरण राजनीति का क्षेत्र अत्यधिक विस्तृत हुआ। वर्तमान पर्यावरण राजनीति में पारिस्थिकीय समस्याओं एवं संकट से संबंध, विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक,प्राकृतिक तंत्रों के साथ मानवीय संबंध, मानव जाति का परस्पर प्राकृतिक संबंध, वैकल्पिक स्रोतों का प्रारूप तैयार करना, पर्यावरण गतिशीलता तथा राजनीतिक संगठनों के सुनियोजित क्रियाकलाप जैसे, विषय शामिल हैं (ड्रिजेक व स्कोटबर्ग 1998:1)। राजनैतिक मुद्दों के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय संबंध, सामाजिक न्याय, नस्ल, गरीबी, शिक्षा, अर्थशास्त्र एवं मानवाधिकार आदि भी पर्यावरण राजनीति से संबंध रखते हैं, जहाँ तक हमारे पर्यावरण को प्रभावित करते हैं। मनुष्य पर्यावरण और राजनीतिक दोनों के केंद्र मैं है। सामाजिक और भौतिक परिवेश में हो रही कोई भी गतिविधियाँ, जिनका सीधा प्रभाव मनुष्यों, जीव जंतुओं, पशु पक्षियों समग्र परिवेश पर पड़ता है ये सभी पर्यावरण राजनीति है।

प्रयागराज में पर्यावरण राजनीति– प्रयागराज में पर्यावरण राजनीति केवल प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की बात ही नहीं करता, अपितु यह किस प्रकार से राजनीतिक निर्णय और नीतियाँ हमारी प्रकृति को प्रभावित करती हैं, इस पर भी विचार करता है। पर्यावरण संरक्षण को मात्र प्रचार का माध्यम बना दिया जाये, तो इसका प्रभाव अल्पकालिक होगा। यह आवश्यक है कि नीति–निर्माता, नागरिक, और संस्थाएँ मिलकर दीर्घकालिक और व्यवहारिक समाधानों की दिशा में कार्य करें। प्रयागराज में पर्यावरण राजनीति एक समकालीन विषय है, जिसमें प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, विकास परियोजनाओं, गंगा नदी की स्वच्छता, हरित क्षेत्र की कटाई, और राजनीतिक निर्णयों की भूमिका प्रमुख है। पर्यावरण राजनीति ने गंगा स्वच्छता को राजनीतिक और सामाजिक विमर्श का हिस्सा बना दिया है। प्रयागराज में पर्यावरण राजनीति दोहरी भूमिका निभाती है, जैसे धार्मिक–सांस्कृतिक परंपराओं का सम्मान साथ ही पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए नियमों का पालन (जैसे कूड़ा प्रबंधन, जैविक अपशिष्ट निपटान आदि)।

1. **प्रयागराज : पर्यावरण परिदृश्य एवं प्रमुख मुददे–** नदी प्रदूषण एवं स्वच्छता– प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ का अमृत स्नान पर्व तथा शहरीकरण, औद्योगिकीकरण से जल प्रदूषित हो रहा है। सी०डब्ल्यू०सी०, सी०पी०सी०बी० रिपोर्ट के अनुसार, महाकुंभ 2019 तथा 2025 के दौरान जल की गुणवत्ता में सुधार संभव है। जल कही– कही पर बी०ओ०डी० मानक से अधिक है (पीआईबी)।

• ठोस अपशिष्ट एवं शौचालय व्यवस्था के लिए स्वच्छ भारत मिशन के तहत राग राज में प्रबंधन व्यवस्था को लागू किया गया।

• भूजल व भूमि उपयोग के अंतर्गत महाकुंभ के समय अस्थायी निवास, अस्थायी निर्माण पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करते हैं (सिंह एवं कुमार 2024)। जनसंख्या वृद्धि के कारण शहर का विस्तार नदी किनारे एवं संगम क्षेत्र तक पहुँच गया है, जिससे भूजल का अंधाधुन दोहन एवं भूमि में बदलाव पर्यावरण संकट पैदा कर रहे हैं।

• सामाजिक – आर्थिक दबाव का प्रभाव पर्यावरण निर्णयों पर पड़ता है (नीति आयोग 2024)।

• प्रयागराज में हरित क्षेत्रों की कमी होती जा रही है, जिसके कारण इसको संरक्षित रखने और बढ़ाने की मांग हो रही है।

2. संस्थागत प्रारूप एवं पर्यावरण निर्णय प्रक्रिया– नगर निकाय, यूपी०पी०पी०सी०बी०, एन०एम०सी०जी०ए नमामि गंगे, एन०पी०टी० सिविल सोसायटी और मीडिया, एन०जी०ओ० आदि।

3. केस स्टडी 1 :

• महाकुंभ के समय जल गुणवत्ता पर प्रभाव पड़ा।

• कोलीफार्म बैक्टीरिया की संख्या वृद्धि, बी०ओ०डी० और सी०ओ०डी० का स्तर बढ़ा।

4. केस स्टडी 2 : नमामि गंगे व प्रयागराज– नमामि गंगे/एन०एम०सी०जी० परियोजनाएँ प्रयागराज सहित गंगा बेसिन में एन टी पी निर्माण, नाले अपग्रेडेशन, नदी फ्रंट डेवलपमेंट एवं सार्वजनिक जागरूकता पर निवेश करती हैं।

राष्ट्रीय नीतियों का प्रयागराज में स्थानीय प्रयोग– भारत सरकार द्वारा एवं उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा जारी पर और संरक्षण एवं सतत विकास हेतु जो नीतियां बनाई गई है, उन नीतियों का प्रयागराज जनपद में भी लागू होता है। अति संक्षिप्त रूप से कुछ नीतियां जो प्रयागराज में चलाई जा रही है, उनका वर्णन किया गया है, जो इस प्रकार से हैं :

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

जल प्रदूषण नियंत्रण एवं संरक्षण, नमामि गंगे परियोजना, ठोस एवं तरल कचरा प्रबंधन, वायु प्रदूषण के नियंत्रण के लिए कि ये क्या उपाय, जैसे इलेक्ट्रॉनिक वाहन, एवं कार्बन डाइऑक्साइ को अवशोषित करने वाले वृक्षारोपण, जैव विविधता संरक्षण, कुंभ मेला और पर्यावरण प्रबंधन जिसके अंतर्गत प्लास्टिक मुक्त कुम्भ, जल प्रबंधन, वायु प्रदूषण नियंत्रण जागरूकता अभियान चलाया गया।

राष्ट्रीय स्तर की नीतियों को भी अपनाए गए हैं, जो अति संक्षिप्त रूप से अग्रलिखित है :

राष्ट्रीय रणनीति, जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना पर्यावरण कानून एवं अन्न नीतियां जैसे स्वच्छता भारत मिशन,, नमामि गंगे परियोजना राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम, क्योटो प्रोटोकोल और पेरिस समझौता आदि।

पर्यावरण राजनीति की चुनौतियां– प्रयागराज में पर्यावरण राजनीति को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है :

शक्ति असंतुलन, समन्वय की कमी, जलवायु सरलीकरण, सांस्कृतिक दबाव, दीर्घकालिक रखरखाव, डेटा पारित नीति की कमी, सामुदायिक भागीदारी की असमानता तथा पर्यावरण चुनौतियां जैसे– जल प्रदूषण ,वायु प्रदूषण, जैवविविधता का क्षय ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, अवैध निर्माण कार्य में भूमि का उपयोग आदि हैं।

नीतिगत सुझाव– स्थायी मेला प्रबंधन,स्पष्ट कार्य विभाजन, बजट एवं नीतियों में एस जी डी टैगिंग, वैज्ञानिक डेटा ओपन प्लेटफॉर्म, दीर्घकालिक योजनाएं, जागरूकता, स्थानीय सहयोग, स्थानीय शासन प्रणाली का सहयोग एवं शिक्षा द्वारा उचित मार्गदर्शन के माध्यम से सफलता प्राप्त की जा सकती हैं।

निष्कर्ष– राष्ट्रीय एवं स्थानीय राजनीति में पर्यावरण राजनीति केंद्र बिन्दु है, क्योंकि वर्तमान सतत स्थानीय विकास के लिये समस्त नीति–निर्माण क्रियान्वयन में पर्यावरण संरक्षण केंद्र बिन्दु है। इसके लिए संपोषणीय भूमि, जल, जैवविविधता, ऊर्जा, परिवहन, आजीविका विकास, औद्योगिकीकरण आदि नीतियां बनाई जा रही हैं, जो सतत् स्थानीय विकास में मील का पत्थर साबित होगा। सहभागी शासन, स्वदेशी ज्ञान का उपयोग, नवीन प्रोद्योगिकियों को अपनाकर प्रयागराज सतत विकास की ओर अग्रसर है।

सदर्न्भ ग्रन्थ सूची

1. कुमार निर्मलेंदु, (2019). प्रयागराज और कुंभ, लोकभारती प्रकाशन पृष्ठ–50
2. World commission on environment and development, aur common future,(1987) oxford university press.
3. Dr. yzek, S.john & Schlosberg, David (eds),(1998). Debating the Earth: A policy reader, Oxford university press, new yark.
4. https://www.nytimes.com/magzine/how-silent-spring-ignited-the-environmental-movement.html
5. https://pdaprayagraj.org/https://prayagrajdivision.nic.in
6. Up govt sdgs 2023-2024.
7. Central Water Commission (CWC). (2025). Kumbh Mela 2025-Water Quality Report. New Delhi: CWC. (Report includes monitoring data for Jan 15-Mar 07, 2025). pp. 1-48.
8. Guha,R. (2000). Environmentalism: A Global History. New York: Longman. pp. xiii-161.
9. Field Work Report on Maha Kumbh Mela 2025 (Kerala ILDM / volunteer observations). (2025, Apr 23). Report on Maha Kumbh Mela - Final. (Observations on ghat maintenance and Namami Gange interventions). n.p.
10. Registrar General & Census Commissioner of India. (2011). District Census Handbook: Allahabad (Prayagraj) - Part A & B. Directorate of Census Operations, Uttar Pradesh. pp. 1-56.
11. 24Law/Outlook/other legal summaries. (2025, Feb-Mar). NGT directs UPPCB to investigate allegations of open defecation at Maha Kumbh in Prayagraj (reports and legal notices). n.p.
12. CPCB/NGRBA report. (Year n.d.). Environmental Footprints of Mass Bathing on Water Quality (Report_5). Central Pollution Control Board. pp. 1-42. (Kumbh/Prayagraj relevant monitoring data and analysis).
13. NMCG Minutes of Meeting (MoM) and project lists. (2025, May 01). 62nd EC of NMCG Project minutes and decisions. n.p
14. Times of India. (2025). Local reports on Prayagraj infrastructure, heritage Mohall's, and airport expansion relevant to urban development pressures. n.p.
15. India Legal Live / Indialegallive.com. (2025). Mahakumbh 2025: NGT issues notice to UP govt. over open defecation on banks of Ganga (legal coverage). n.p.

*****